ओम शान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-10 अगस्त-II, 2016 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

आध्यात्मिक जीवन की मशाल दादी प्रकाशमणि

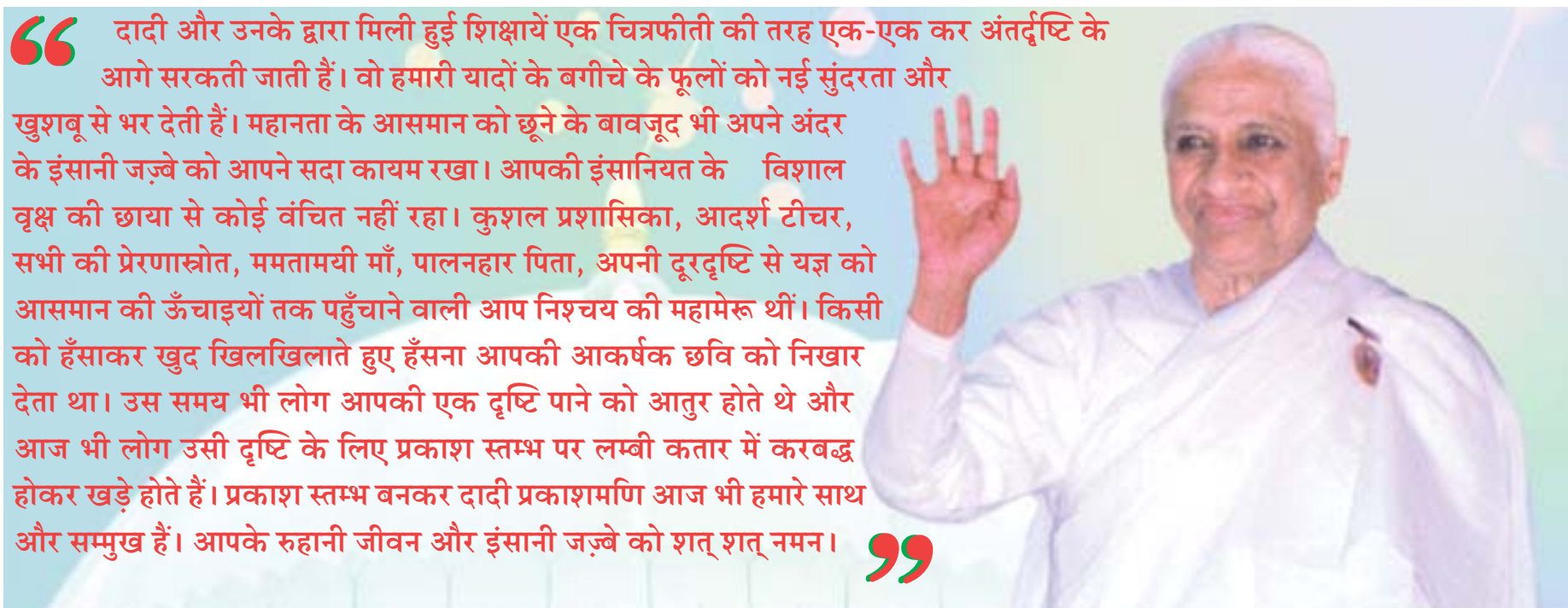

"दादी और उनके द्वारा मिली हुई शिक्षायें एक चित्रफीती की तरह एक-एक कर अंतर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं। वो हमारी यादों के बगीचे के फूलों को नई सुंदरता और खुशबू से भर देती हैं। महानता के आसमान को छूने के बावजूद भी अपने अंदर के इंसानी जज़्बे को आपने सदा कायम रखा। आपकी इंसानियत के विशाल वृक्ष की छाया से कोई वंचित नहीं रहा। कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्त्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली आप निश्चय की महामेरू थीं। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना आपकी आकर्षक छवि को निखार देता था। उस समय भी लोग आपकी एक दृष्टि पाने को आतुर होते थे और आज भी लोग उसी दृष्टि के लिए प्रकाश स्तम्भ पर लम्बी कतार में करबद्ध होकर खड़े होते हैं। प्रकाश स्तम्भ बनकर दादी प्रकाशमणि आज भी हमारे साथ और सम्मुख हैं। आपके रुहानी जीवन और इंसानी जज़्बे को शत् शत् नमन।"

दादी के बारे में जब लिखने बैठते हैं तो शब्द कम पड़ जाते हैं। यूँ तो दादी जी का जीवन एक खुली किताब की तरह रहा। फिर भी हरेक के पास दादी जी के साथ के खूबसूरत लम्हें अपने-अपने हैं। दादी जी ने जिसके साथ जो पल बिताया वो आज भी सबने अपने ख्यालों में संजो कर रखा है। प्यार और ममता से ओत-प्रोत रूहानी दृष्टिपात दादी जी ने जिनपर किये हैं वे आज भी बाबा के यज्ञ के विशाल कार्य में मददगार हैं।

दादी जी का जीवन ही यज्ञ

दादी जी का पूरा जीवन ही यज्ञ था। जिसमें आहूति भी स्वयं, यज्ञ कुंड भी स्वयं और तपाना भी खुद को, ये दादी का मूल स्वभाव था। परमात्मा ने यज्ञ रचा, लेकिन उस यज्ञ की प्रथम ब्राह्मणी कार्यकर्ता दादी प्रकाशमणि जी ही थीं जिन्होंने यज्ञ की मर्यादा को परमात्म मर्यादा में बांध कर रखा। दादी आज भले हमारे साथ साकार में न हों, लेकिन एक पल भी नहीं लगता कि वे हमारे साथ नहीं हैं। आज हर कोई दादी के पदचिन्हों पर चलकर अपनी राह को आसान बना रहा है।

वे पारसमणि थीं

दादी जी को यदि हम पारसमणि की उपाधि दें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अक्सर उनसे मिलने के बाद ऐसा महसूस होता था कि हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। हम अपने को मूल्यवान कीमती सोना समझने लग जाते थे। वो समय बीता है, लेकिन आज भी उन क्षणों को सभी ने मूल्यवान समझकर संजोये रखा है।

आत्मविश्लेषण करने की घड़ी

इस बार हम उनका नौवाँ अव्यक्त दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं, अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। स्वयं को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी विशेषताओं को दादी की विशेषताओं के साथ जोड़कर देखना है कि कहाँ कमी है जिसे हमें बदलना है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी ज़ुबान थकती नहीं है। अगर हम उनके जैसा बन जाते हैं तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी श्रेष्ठ स्मृतियाँ होंगी।

मानवता के सही अर्थ में दादी जी

दादीजी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इंसानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते हैं तो इंसानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को अपने पास बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास, और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं।

सुनी को अनसुनी करना

दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई नौकर, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, उसपर दादी जी की नज़र पड़ती थी। दादी जी के इंसानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व

दादीजी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्त्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली निश्चय की सुमेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परंतु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। उन्होंने एक सफल प्रशासिका के साथ आदर्श विद्यार्थी की भूमिका को भी बखूबी निभाया। 80 साल के जीवन में भी दादी जी एक प्रखर व्यक्तित्व के रूप में जीती रहीं।

- शेष पेज 5 पर...